M.A. Fourth Semester

Third Paper

Agriculture Geography

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of Geography

Harishchandra P.G.College ,Varanasi

प्रश्न :-2 कृषि-भूमि उपयोग से सम्बन्धित मूल संकल्पनाओं का विस्तृत वर्णन कीजिए

अथवा

भूमि उपयोग सर्वेक्षण का क्या महत्व है। भारत में एवं इंग्लैण्ड में हुए कृषि भूमि उपयोग सर्वेक्षण की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :- भूमि उपयोग से तात्पर्य :- Meaning of Land Utilization:

भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का एक पहलू है; वास्तव में 'भूमि उपयोग' शब्द स्वत वर्णनात्मक है। परन्तु प्रयोग (use), पारिभाषिक शब्द उपयोग (Utilization) तथा भूमि संसाधन उपयोग (Land resource utilization) के अर्थ की व्याख्या में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। वर्तमान विद्वानों के अनुसार इन शब्दों की व्याख्या अलग-2 की जानी चाहिए।

कावस के मतानुसार :- "भूमि उपयोग, भूमि प्रयोग की शोधन प्रक्रिया है जिसमें भूमि का व्यावहारिक उपयोग किसी निश्चित उद्देश्य से किया जाता है।" इसमें 'भूमि प्रयोग' के अन्तर्गत भूभाग प्रकृत-प्रदत्त विशेषताओं के अनुरूप होता है। इसमें यदि कोई भू-भाग मानवीय प्रभावों से वंचित है अर्थात् उसका उपयोग प्राकृतिक रूप से हो रहा है तो उस भू-भाग के लिए **भूमि-प्रयोग** (Land use) शब्द का प्रयोग उचित होगा। तथा उस भूभाग के लिए, जिस पर मानव अपनी आवश्यकता के अनुरूप भूमि का उपयोग कर रहा है "**भूमि उपयोग**" (Land Utilization) शब्द का प्रयोग अधिक उचित होगा।

ग० बी० एस० चौहान के मतानुसार :- '**प्रयोग**' तथा '**उपयोग**' में सूक्ष्म अन्तर है। दोनों शब्द दो भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के सूचक है। '**प्रयोग**' शब्द **संरक्षण संदर्भ** तथा '**उपयोग**' शब्द **व्यावहारिक सन्दर्भ** में प्रयुक्त होता है। समय के सन्दर्भ में 'प्रयोग' क्षण एवं अवधि दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है परन्तु 'उपयोग' केवल अवधि के सन्दर्भ में ही प्रयुक्त होता है। उनके अनुसार मानव अपनी आवश्यकतानुसार भूमि के उचित एवं अनुचित उपयोग का निरन्तर

करता है तथा लाभ-प्रद भूमि उपयोग को अपनाता है। ऐसी अवस्था में 'भूमि उपयोग' शब्दावली का प्रयोग अधिक उपयुक्त होगा।

बैनर्जी के अनुसार:- भूमि उपयोग प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक उपादानों के संयोग का प्रतिफलन है।

वुड के अनुसार:- 'भूमि उपयोग' केवल प्राकृतिक भू दृश्य या वनस्पति आच्छादित भूदृश्य के सन्दर्भ में ही नहीं बल्कि मानवीय क्रियाओं से उत्पन्न उपयोगी सुधारों के रूप में भी प्रयुक्त होना चाहिए।

इसी संबंध में तीसरा शब्द 'भूमि संसाधन उपयोग' का प्रयोग प्रायः भू-अर्थशास्त्रियों ने किया है जिसमें भूमि संसाधन इकाई का उपयोग आदर्शतम उपयोगिता सिद्धान्त के अनुरूप किया जाता है। प्रो. बारलो के अनुसार:- 'भूमि संसाधन उपयोग' भूमि समस्या एवं योजना संबंधी विवेचना की धुरी है।

'भूमि संसाधन उपयोग' अध्ययन के महत्वपूर्ण पक्ष इस प्रकार हैं:-

(i) व्यक्ति तथा समाज दोनों को आर्थिक समृद्धि प्रदान करना,

(ii) भूमि संसाधन उपयोग की अवस्था, क्षमता तथा अनुकूलतम उपयोग को निर्धारित करना।

(iii) विभिन्न लागत कारकों - पूँजी श्रम आदि के अनुपात में भूमि से अधिकतम लाभ प्राप्त करना।

(iv) कृषि भूमि के उपयोग में मूल्य, लाभ तथा माँग के आधार पर लाभकारी सामंजस्य तथा परिवर्तन संबंधी सुझाव देना।

(v) अनुकूलित एवं बहु-भूमि उपयोग की विवेचना करना तथा सुझावों का क्षेत्रीय अंगीकरण करना।

कृषि-भूमि उपयोग से सम्बन्धित मूल संकल्पनाएं:- भूमि उपयोग अध्ययन संबंधी संकल्पनाएं इस प्रकार हैं।

(I) भूमि-संसाधन की आर्थिक संकल्पना:- Economic Concept of Land Resource:- भूमि का अर्थ भिन्न भिन्न लोगों के लिए भिन्न होता है:- साधारणतया 'भूमि' शब्द का प्रयोग निम्न रूपों में किया जाता है: (i) क्षेत्र (Space) (ii) प्रकृति (Nature)

(3) उत्पादन कारक (Production factor) (4) उपयोग पदार्थ (Consumption material) (5) स्थिति (Situation) (6) सम्पत्ति (Property) (7) पूँजी (Capital)

एक भूगोलवेत्ता के लिए सर्वप्रथम भूमि एक क्षेत्र है जो मात्रा में स्थायी तथा अनश्वर है जिसे धरातल, मिट्टी तथा पृथ्वी के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। 'क्षेत्र' से आशय उन सभी स्थानों से है जहाँ से मानव अपनी जीविका अर्जित करता है तथा मानव क्षेत्र को अपनी आवश्यकतानुसार प्रयुक्त करता है। इस प्रकार भूमि, उपयोगिता के दृष्टिकोण से आर्थिक संसाधन बन जाती है - अर्थशास्त्री भूमि को उत्पादन कारक के रूप में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं। आधुनिक अर्थ-तंत्र में राजनीतिक स्थिति कारकों का अद्वितीय स्थान है। भूमि की सम्पत्ति के रूप में मान्यता कानूनी पक्ष का द्योतक है। सम्पत्ति के लिए मानव की धारणा मौलिक होती है। उत्पादन कारक के रूप में भूमि एक पूँजी है। अर्थशास्त्री के लिए भूमि एक पूँजी है।

(II) भूमि-उपयोग क्षमता की संकल्पना :- Concept of land utilization capacity.

बारलो के मतानुसार : भूमि उपयोग क्षमता से आशय भूमि संसाधन इकाई की उत्पादन क्षमता से है जिसमें उत्पादन आगत की अपेक्षा शुद्ध लाभ अधिक होता है। उदाहरणार्थ :- क, ख तथा ग तीन उत्पादन इकाइयों में क्रमशः शुद्ध लाभ 50 रु०, 100 रु० तथा 150 रु० है। फलस्वरूप भूमि में 'ग' इकाई की भूमि उपयोग क्षमता सर्वाधिक होगी। कृषि भूमि उपयोग क्षमता की परिभाषा का सम्बन्ध उस ह्रासोत्पादक क्रिया से है जहाँ पूँजी तथा श्रम क्रमिक-प्रयोग के आधार पर भूमि की उत्पादन मात्रा में निरन्तर वृद्धि होती है। लेकिन भूमि उपयोग क्षमता की व्याख्या एक ओर अकृष्य (Non Cultivable) कृष्य (Cultivable) तथा कृषि क्षेत्र (Net Sown), दूसरी ओर, सिंचित, बहुफसली क्षेत्र तथा तीसरी ओर सभी उत्पादित फसलों के प्रति एकड़ उपज के मध्य संयोग से की जा सकती है।

(III) आदर्शतम (सर्वोत्तम) भूमि उपयोग की संकल्पना :- Concept of best or optimum Land utilization :

भूमि उपयोग इस रूप में होना चाहिए जिससे किसी निश्चित अवधि में उससे अधिकतम शुद्ध आय प्राप्त हो। वह उपयोग जिससे सर्वाधिक आय प्राप्त हो

आदर्शतम उपयोग है। भूमि का उपयोग उस समय सर्वोत्तम समझा जाता है जब उसका उपयोग एक या सम्मिश्रित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सर्वाधिक शुद्ध लाभ या न्यूनतम हानि की भावना से किया जाता है। अत सर्वोत्तम भूमि-उपयोग की संकल्पना तुलनात्मक लाभ के सिद्धान्त से निर्धारित होती है। इस संकल्पना में दो पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है (i) भूमि उपयोग क्षमता (ii) भूमि के अनेक उपयोगों के लिए प्रतिस्पर्धी माँग। काउन्स के मतानुसार: आदर्श भूमि उपयोग दो मुख्य विशेषताओं का बोध कराता है (i) उपयोगी किस्म (ii) गहनता। काउन्स ने ही भूमि उपयोग के आदर्शतम क्षमता का निर्धारण दो विशेष प्रतिमानों के आधार पर किया है।

(i) एक लागत कारक के आधार पर आदर्शतम भूमि उपयोग गहनता का निर्धारण (ii) अनेक लागत कारकों के आधार पर आदर्शतम भूमि उपयोग गहनता का निर्धारण।

(iv) तुलनात्मक लाभ की संकल्पना :- (Concept of Comparative Advantage)

भूमि उपयोग अध्ययन में तुलनात्मक लाभ की संकल्पना महत्वपूर्ण है। निर्णयकर्त्ता भूमि के अनेक उपयोगों में से तुलनात्मक लाभ के सिद्धान्त के आधार पर एक उपयोग को निर्धारित करता है। वह ऐसा उपयोग अपनाता है जिससे किसी निश्चित अवधि में सर्वाधिक शुद्ध आय होती है। द० सं० रा० अ० की कई पेटी, यूक्रेन के गेहूँ पेटी तथा द० ब्राजील का कहवा उत्पादक प्रदेश संसार के विशिष्ट कृषि प्रदेशों में है जिसको तुलनात्मक लाभ के आधार पर अपनाया जाता है। यदि किसी क्षेत्र A में प्रति लागत इकाई आय दूसरी क्षेत्र B की अपेक्षा अधिक है तो यह कहा जा सकता है कि A क्षेत्र में उस उत्पादन लागत के सम्बन्ध में तुलनात्मक लाभ अधिक है। उदाहरणार्थ भूमि उत्पादकता के आधार पर चावल उत्पादन के लिए द० भारत में उ० भारत की अपेक्षा तुलनात्मक लाभ है अर्थात समान श्रम एवं पूँजी लागत में द० भारत में प्रति एकड़ चावल उत्पादन उ० भारत की अपेक्षा अधिक होता है।

तुलनात्मक लाभ दो प्रकार का होता है : भौतिक तुलनात्मक लाभ तथा आर्थिक तुलनात्मक लाभ। भौतिक तुलनात्मक लाभ से तात्पर्य उन भौतिक कारकों से है जिसके कारण उस उत्पादन इकाई को अपेक्षाकृत

अधिक लाभ होता है। जैसे : भूमि उत्पादकता के कारण प्रति इकाई उत्पादन का अधिक होना। आर्थिक तुलनात्मक लाभ से तात्पर्य उन आर्थिक कारकों से है जिससे किसी भी उत्पादन इकाई में दूसरे की अपेक्षा अधिक शुद्ध आय होती है। उदाहरणार्थ :- दो समान इकाइयों में बराबर पूँजी तथा श्रम लागत के बदले समान मात्रा में टमाटर का उत्पादन होता है फलतः किसी एक इकाई को तुलनात्मक लाभ नहीं होता है। यदि एक इकाई में दूसरे की अपेक्षा सस्ता श्रम उपलब्ध है तो उस क्षेत्र में आर्थिक कारण से अधिक तुलनात्मक लाभ होगा। फलस्वरूप टमाटर के उत्पादन की विशिष्टता का होना स्वाभाविक है।

(v) क्षेत्रीय संतुलन की संकल्पना :- (Concept of Spatial Equilibrium)

भूमि उपयोग के व्यावहारिक अध्ययन का यह एक महत्वपूर्ण पक्ष है। किसी भी भाग का भूमि उपयोग क्षेत्रीय माँग तथा पूर्ति सिद्धान्त के अनुरूप संतुलित होना चाहिए। यदि भूमि उपयोग संतुलित है तो भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक भी स्थायी होंगे। मुख्य रूप से भूमि उपयोग के संतुलन का स्वरूप तीन प्रकार का होता है। ⇒ (i) साधारण संतुलन (ii) आंशिक संतुलन (iii) पूर्ण संतुलन। साधारण संतुलन क्षेत्रीय माँग के अनुरूप तथा स्थायी होता है। वह भूमि उपयोग संतुलन जो क्षेत्रीय माँग के अनुरूप नहीं स्थापित होता है आंशिक संतुलन कहलाता है। यदि भूमि उपयोग अन्तःक्षेत्रीय व्यापार तथा अन्य पदार्थों के माँग के अनुरूप संतुलित है तब उसमें अपेक्षाकृत अधिक स्थायित्व होगा। ऐसे भूमि उपयोग को पूर्ण संतुलित भूमि उपयोग कहा जाता है।

किसी भी क्षेत्र में संतुलित भूमि उपयोग संबंधी प्रतिमान प्रस्तुत करते समय मूल्य, माँग, पूर्ति, यातायात तथा बाजार दूरी संबंधी चरों के प्रभाव का मूल्यांकन आवश्यक होता है। डन महोदय ने प्रत्येक पदार्थ के उत्पादन क्षेत्र तथा उनके अन्तर्सम्बन्धों को निम्न अनुपात के आधार पर प्रस्तावित किया है।

$E = (P - C - td)Y$ जहाँ E = प्रति इकाई भूमि से आर्थिक आय P = प्रति इकाई उत्पादन का बजार मूल्य C = प्रति इकाई उत्पादन की लागत, t = प्रति इकाई उत्पादन तथा प्रति इकाई दूरी का यातायात व्यय d = बाजार से दूरी Y = प्रति इकाई भूमि की उपज।

(IX) बहु भूमि उपयोग की संकल्पना ⇒ (सीमित भूमि संसाधन पर अनेक आवश्यकता इसमें किसी क्षेत्र में भूमि उपयोग इस प्रकार अपनाया जाता है जिसमें जैसे- नगरों में आवासीय विस्तार के दृष्टिकोण से ऐतिहासिक आवासीय

(vi) दूरी संकल्पना :- (Concept of distance) ग्रामीण भूमि उपयोग विश्लेषण में दूरी एक महत्वपूर्ण संकल्पना है। दूरी एक ऐसी इकाई है जिसका प्रभाव भूमि उपयोग पर पड़ता है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान वान थ्यूनेन ने सर्व प्रथम ग्रामीण भूमि उपयोग तथा दूरी के सम्बन्धों को सैद्धान्तिक रूप दिया। वान थ्यूनेन के अनुसार बाजार तथा दूरी के बढ़ने के साथ-साथ भूमि उपयोग स्वरूप में अन्तर तथा अधिशेष (आर्थिक लगान Economic rent) में ह्रास होने लगता है। कृषक के घर से जैसे-जैसे उसके खेत की दूरी बढ़ती जाती है शस्य स्वरूप में अन्तर मिलता है तथा शुद्ध लाभ की दर में कमी हो जाती है। अतः भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले अनेक आर्थिक कारकों में दूरी का स्थान महत्वपूर्ण है।

(vii) भूमि उपयोग की व्यावहारिक संकल्पना :- Behavioural Concept of Land Utiligation :- इस संकल्पना का संबंध निर्णयकर्ता के व्यवहार एवं उस दशा से है जिसके अन्तर्गत वह भूमि उपयोग सम्बन्धी निर्णय लेता है। व्यवहार सिद्धान्त के प्रतिपादन में अनेक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। (i) मानव निर्णय-कार्य एक अत्यन्त जटिल प्रक्रिया है (ii) मानव व्यवहार का वस्तुनिष्ठ निरीक्षण करना कठिन कार्य है। (iii) स्वयं शोधकर्ता द्वारा मानव के व्यवहार तथा उसके निर्णय की जानकारी होने के कारण सिद्धान्त प्रतिपादन में समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। — सामान्यतया, कृषक फसल बोने से पूर्व कई बार निर्णय लेता है। इसमें उसका व्यवहार तीन विशेष पक्षों से प्रभावित होता है अर्थात् निर्णय कर्ता के व्यवहार का तीन विशेष पक्षों से निकटतम संबंध होता है। (i) उपयोगिता (ii) संतुष्टता (iii) व्यक्ति-निष्ठ सम्भाव्यता।

(viii) भूमि उपयोग में प्रत्यक्ष ज्ञान तथा प्रतिबिम्ब संकल्पना :- Concept of Perception and Image of land Utiligation :- के अनुसार भूमि उपयोग अध्ययन में प्रत्यक्ष ज्ञान तथा प्रतिबिम्ब अत्यन्त जटिल संकल्पना है। उपयोग निर्णय में निर्णयन-वातावरण का महत्व पूर्ण स्थान है। निर्णय क्रिया प्रत्यक्ष तथा प्रतिबिम्बित ज्ञान से प्रभावित होती है जिसके आधार पर निर्णयन वातावरण निर्धारित होता है। भूमि

की पूर्ति के लिए बहु भूमि उपयोग को अपनाना अनिवार्य होता है। कि उस भूमि इकाई का अनेक तथा हस्तान्त के उपयोग किया जा सके। योजना के स्थान पर संकलित योजना को प्राथमिकता दी जाय।]

उपयोग संबंधी निर्णय में अधिगमन तथा सीख दो आधारों पर प्राप्त होती है।
(i) व्यक्ति विशेष द्वारा प्राप्त अनुभव पर आधारित ज्ञान तथा
(ii) दूसरे व्यक्तियों या बाह्य साधनों द्वारा प्रभावित ज्ञान।

जब मानव भूमि उपयोग निर्णय लेता है तो निर्णय कार्य सीधे प्रत्यक्ष ज्ञान से प्रभावित होता है।

भूमि उपयोग सर्वेक्षण का महत्व :- कृषि नियोजन में भूमि उपयोग का ज्ञान कई अर्थों में महत्वपूर्ण है संसार के जो प्रदेश प्राचीन काल से कृषि के अन्तर्गत हैं वहाँ किसानों ने भूल और सुधार अथवा निरन्तर प्रयोगों के द्वारा भूमि उपयोग को स्थानीय भौगोलिक तत्वों के अनुकूल बना लिया है। जो कृषि भूमि जिस फसल अथवा घास आदि के लिए अधिकतम उपयुक्त है, उसको उस उपयोग के अन्तर्गत कर लिया है। अतः इन प्रदेशों का भूमि उपयोग वहाँ की कृषि क्षमता अथवा कृषि की दृष्टि से भूमि की श्रेष्ठता की ओर इंगित करता है।

भूमि उपयोग सर्वेक्षण से यह तो ज्ञात होता ही है कि कितनी कृषि भूमि किस उपयोग में है, साथ ही साथ इस बात का भी ज्ञान होता है कि किस प्रदेश में भूमि संबंधी क्या समस्याएँ हैं। कहाँ पर भूमि उपयोग उपयुक्त नहीं है, कहाँ सघन कृषि की सम्भावनाएँ हैं। किसी विशेष फसल का कहाँ विस्तार हो सकता है। अथवा किन भागों में फसली क्षेत्र है। इस प्रकार भूमि उपयोग सर्वेक्षण तथा उसके मानचित्र कृषि नियोजन की पहली सीढ़ी है। क्योंकि कृषि नियोजन के पूर्व यह ज्ञान आवश्यक है कि नियोजन के लिए किस प्रकार की भूमि है, उसमें कितनी कृषि क्षमता है और कहाँ पर विस्तार की सम्भावनाएँ हैं।

भूमि उपयोग सर्वेक्षण से उसके प्रादेशिक वितरण के प्रतिरूप भी उभरते हैं। कृषि-प्रणाली, फसलों का वितरण, घास के मैदान तथा अन्य प्राकृतिक वनस्पति के प्रादेशिक वितरण का भी सही ज्ञान होता है। उन प्रदेशों का सीमांकन हो जाता है जहाँ

कि कृषि का आधार कसलें है अथवा जहाँ मिश्रित कृषि है अथवा जहाँ मुख्यतः पशुपालन होता है।

भूमि उपयोग सर्वेक्षण से उर्वरता और उत्पादन आदि की दृष्टि से भूमि के वर्गीकरण में भी सहायता होती है जिससे कृषि के लिए उसका सही मूल्यांकन किया जा सके तथा उस ज्ञान के आधार पर भविष्य के भूमि उपयोग के नियोजन, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोगों जैसे उद्योग, अधिवासों आदि के लिए भूमि को देने का नियोजन भी संभव होता है।

Agricultural land use Survey in Great-Britain:-

भूमि उपयोग सर्वेक्षण के महत्व को ध्यान में रखकर डॉ० डडले स्टाम्प ने सन 1930 में ब्रिटेन को प्रत्येक एकड़ भूमि तथा प्रत्येक खेत के भूमि उपयोग के सर्वेक्षण की योजना बनाई। यह कार्य मुख्यतः ऊँची श्रेणी के 22,000 स्वयंसेवी विद्यार्थियों व शिक्षकों द्वारा किया गया, जिनके लिए अपने विषय का एक पाठ था और अमूल्य ज्ञान का एकत्रण भी। सन 1931 में यह कार्य सम्पूर्ण देश में होने लगा तथा लन्दन स्कूल ऑफ इकोनामिकस में, जो इस सर्वेक्षण का केन्द्र था रिकार्ड एकत्रित होने लगे। सन 1933 मे पहला भूमि उपयोग मानचित्र प्रकाशित हुआ। सर्वेक्षण कार्य 6 इंच = 1 मील मापक वाले मानचित्रों पर किया गया। प्रकाशित मानचित्र 1 इंच = 1 मील मापक पर है। साथ ही दो प्रकार का शोध कार्य और किया गया।

(i) भूमि उपयोग मानचित्रों में निहित ज्ञान का विश्लेषण तथा

(ii) ऐतिहासिक काल में भूमि उपयोग में परिवर्तन।

ब्रिटेन में एक इंच वाले मानचित्रों में भूमि उपयोग का वर्गीकरण इस प्रकार है (L.D. Stamp- 1968)

(a) कृषि योग्य अथवा जोती गयी भूमि भूरे रंग से दिखायी गयी।

(b) मेडोलैण्ड तथा स्थायी घास के प्रदेश, हल्के रंग से दिखाये गये।

(c) हीथलैण्ड, मूरलैण्ड, कामन्स तथा कड़ी घास के प्रदेश पीले रंग से दिखाये गये।

(d) वन तथा काष्ठयुक्त वन गहरे रंग से दिखाये गये।
(e) उद्यान सहित आवास – बैंगनी रंग से दिखाये गये।
(f) फलों के बागान बैंगनी रंग तथा वृक्षों के चिह्नों को लाइनों से दिखाए गये (प्राचीन मानचित्रों में), नये मानचित्रों में बैंगनी बड़ी लाइनों से दिखाए गये।
(g) नर्सरी जो बैंगनी लाइनों से दिखायी गयीं बाद में बैंगनी चौखानों से।
(h) भूमि जो कृषि के सन्दर्भ में उत्पादक हो लाल रंग से दिखायी गयी।
(i) विशेष प्रकार की भूमि जो कुछ मानचित्रों में ही दिखायी गयी, लाल रंग तथा दलदल के चिह्न से दरशाये गये।

सन् 1930 के पश्चात ब्रिटेन में जो कृषि क्रान्ति हुई उसका सारांश में परिणाम यह था कि 1930–58 के बीच कृषि उत्पादन 60% बढ़ा।

प्रथम भूमि उपयोग सर्वेक्षण पुराना पड़ जाने के कारण द्वितीय सर्वेक्षण की आवश्यकता महसूस होने लगी। यह कार्य 1960 में आरम्भ किया गया तथा कोलमन के निर्देशों में पूरा किया गया। प्रथम सर्वेक्षण की भाँति स्कूल कालेज तथा विश्वविद्यालयों, भौगोलिक समितियों, ग्रामीण अध्येताओं, तथा काउन्टीस्तरीय राष्ट्रीय कृषक संघों की मदद से भूमि उपयोग की सूचनाएं एकत्रित की गयीं। इसमें कुल तेरह वर्ग बने जबकि विश्व भूमि उपयोग सर्वेक्षण में केवल नौ वर्ग रखे गये हैं। (कोलमन–1961) इनको 1:25,000 मापक वाले मानचित्रों में प्रकाशित किया गया। इन मानचित्रों में आवास को धूसर बाजार हेतु बागवानी को बैंगनी, फलोद्यान को बैंगनी पट्टियों, कृषियोग्य भूमि भूरे, घास के क्षेत्र हल्के हरे, हीथ-मूरलैण्ड तथा कड़ी घास के क्षेत्र पीले, वन गाढ़े हरे, जल तथा दलदली भूमि नीले, परित्यक्त भूमि काली पट्टियों उद्योग लाल, परिवहन नारंगी, खुले क्षेत्र नारंगी हरा तथा बन्दरगाह विहीन क्षेत्रों को सफेद रंगों से प्रदर्शित किया गया है। इनको एक इंच = 10 मील के मापक पर प्रकाशित किया गया।

ग्रेट ब्रिटेन के अन्तर्गत इंग्लैण्ड, वेल्स, आयरलैण्ड, आफ मैन तथा स्काटलैण्ड ये चार क्षेत्र आते हैं। एल.डी. स्टाम्प महोदय ने भूमि उपयोग सर्वेक्षण की दृष्टि से स्काटलैण्ड को 30 काउन्टियों में, वेल्स को 13 काउन्टियों में, इंग्लैण्ड को 48 काउन्टियों में या आइलैण्ड आफ मैन (Island of Man) को एक काउन्टी में रखा।

इंगलैण्ड का कुल क्षेत्रफल 32033600 एकड़, वेल्स का 5098700 एकड़, स्काटलैण्ड का 19084500 एकड़ तथा आइलैण्ड ऑफ मैन का 141000 एकड़ अभिलेखित किया गया है। ब्रिटेन में भूमि उपयोग सर्वेक्षण का संक्षिप्त सारांश निम्न प्रकार है —

	भूमि उपयोग प्रकार	← प्रतिशत में				→
		सम्पूर्ण संयुक्त ब्रिटेन	इंगलैण्ड	वेल्स	स्काटलैण्ड	आइलैण्ड ऑफ मैन
1.	कृषि क्षेत्र	21.4	26.0	10.5	16.4	46.5
2.	स्थायी घासक्षेत्र	33.2	47.7	42.5	7.7	14.2
3.	फलोद्यान	0.5	0.8	0.1	—	—
4.	वन एवं काष्ठ क्षेत्र	5.7	5.7	5.8	5.8	2.0
5.	रूक्ष चरागाह	33.3	11.9	37.4	68.2	31.6
6.	गृह एवं बगीचे	3.1	4.6	1.4	0.8	2.7
7.	कृषि के अयोग्य भूमि	2.5	3.3	2.3	1.1	3.0